नाटक - जीव है सो मैं ही हूँ।"

लेखिका - ब्र. डॉ. आरती जैन

पात्र - दस मित्र , एक विद्वान

पहला मित्र - चलो भाई ! कहीं तीर्थ वंदना को चलते हैं -
दूसरा मित्र - हाँ भाई ! विचार तो बहुत अच्छा है, चलो चलते हैं -
तीसरा मित्र - पर मित्र ! ये तो बताओ कौन से तीर्थ चलने का विचार है ?
चौथा मित्र - मेरा तो विचार है, पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन करने बनारस नगरी चलते हैं -
(सभी मित्र एक साथ -- हाँ - हाँ बनारस नगरी ही चलते हैं -
पाँचवा मित्र - (छटवें मित्र से) - चेतन ! ऐसा करना तुम आज ही नाव वाले से बात कर लेना, रात्रि 7 बजे अपन सब निकल जायेंगे ।
छटवाँ मित्र - ठीक है मित्र ! मैं नाव वाले से बात कर लूँगा ।
सातवाँ मित्र - तो मित्रो ! आज शाम हम सभी गंगा के घाट पर मिलते हैं -- जयजिनेन्द्र ।
प्रत्युत्तर -- (समवेत स्वर में -- जयजिनेन्द्र)
(एक चक्कर लगा कर)
(सभी मित्र नाव में एक के पीछे एक बैठ जायेंगें, चार मित्रों के हाथ में डाँड रहेगा, जिसे वे एक्टिंग कर चलायेंगे।)
यात्रा प्रारम्भ करते समय - बोलो पार्श्वनाथ भगवान की जय -- ।
आठवाँ मित्र - मित्रों ! बनारस पहुँचने में बहुत समय लगेगा -- ऐसा करते हैं, समय बिताने के लिये कुछ करते हैं।
नौवा मित्र - ठीक है भाई ! अन्ताक्षरी खेलते हैं -
दसवाँ मित्र - शुरू करो अन्ताक्षरी, लेकर प्रभु का नाम ।
समय बिताने के लिये करना है कुछ काम ॥ 'म' से बोलो --
पहला मित्र - मीठे रस से भरी जिनवाणी लागे, जिनवाणी लागे ।
मने आत्मा की बात घणी प्यॉरी लागे
दूसरा मित्र - गा रे भैया, गा रे भैया, गा रे भैया गा,
प्रभु गुण गा तू समय न गवाँ ---
तीसरा मित्र - बनारस वाले [2] पार्श्वनाथ हमारे बनारस वाले ,
वामा देवी घर जन्म लियो है, माता की कोख को धन्य कियो है,
अश्वसेन की आँखों के तारे [2] पार्श्वनाथ हमारे बनारस वाले --
चौथा मित्र - ला ल र ल र लर लर लर ला, बाजे कुण्डलपुर में बधाई कि नगरी में,
वीर जन्मे [2] महावीर जी --
पाँचवा मित्र - जीयरा हो, हो जीयरा, जीवराज उड़ के आओ सम्मेद शिखर में
भाव सहित वंदन करो, पार्श्व चरण में -- हो जीयरा -- [2]

छटवाँ मित्र - रंगमा -- रंगमा - रंग मा रे, प्रभु सारा ही रंग मा रंगि गयो रे --
सातवाँ मित्र - रोम - रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा ---
आठवाँ मित्र - रोम - रोम पुलकित हो जाये, जब जिनवर के दर्शन पाये --
नौवां मित्र - ये धर्म है आतमज्ञानी का, सीमंधर महावीर स्वामी का,
इस धर्म का भैया क्या कहना, ये धर्म है वीरों का गहना
जय हो -!!
दसवाँ मित्र - होली खेले मुनिराज, शिखर वन में, अकेले वन में मधुवन में,
मधुवन में आज मची रे होली, मधुवन में --

पहला मित्र - (इशारा करते हुए) -- अरे, अरे ! मित्रों देखो बनारस नगरी आ गई -।
बोलो - पार्श्वनाथ भगवान की जय --
(नाव से उतर कर खड़े हो जायेंगें।)
दूसरा मित्र - देखो मित्रों ! नगरी में जाने से पहले एक बार गिनती कर लें, पूरे हैं कि नहीं।
तीसरा मित्र - चलो मैं गिनता हूँ -- (गिनेगा) - एक - दो -- तीन -- नौ --।
अरे ! अरे ! रे ये क्या हुआ, जब हम गाँव से निकले थे तो पूरे दस थे,
लेकिन अब नौ ही बचे --।
चौथा मित्र - अरे भाई ! तुमने अच्छे से नहीं गिना, मैं गिनता हूँ -
एक दो --- नौ, अरे नौ ही है --
पाँचवा मित्र - अरे, अरे ! लगता है तुम दोनों को ही गिनना नहीं आता - मैं अंग्रेजी
में गिनता हूँ - वन - टू - --- नाइन, अरे क्या बात है,
नाइन ही है !
छटवाँ मित्र - अरे लगता है, रास्ते में अपना एक मित्र डूब गया -- उँ उँ ऊँ
(सब मित्र रोने लगते हैं।)
(तभी वहां से एक पंडित जी निकलते हैं।)
पंडित जी - क्यों भाई क्या बात है, तुम सब रो क्यों रहे हो ?
सातवाँ मित्र - क्या बतायें ! हमारा एक मित्र गंगा में डूब गया।
पंडित जी - क्या गंगा में डूब गया, कब डूबा ?
आठवाँ मित्र - ये तो हमें नहीं मालूम लेकिन - हम अपने गाँव से दस मित्र आये थे,
अब हम नौ ही बचे।
पंडित जी - अच्छा - अच्छा मैं समझ गया, चलो कोई बात नहीं, एक बार मैं
गिनता हूँ, देखो एक - दो -- दस, देखो तुम लोग तो पूरे दस
ही हो, तुम्हारा कोई मित्र नहीं डूबा, तुम गलती ये कर रहे थे, तुम

दूसरों को तो गिन रहे थे, लेकिन स्वयं को गिनना ही भूल जा रहे थे; इसलिये दुखी हो रहे थे ।

सिद्धान्त- इसी प्रकार यह जीव, जीव को जानने के नाम पर जीवद्रव्य, जीव तत्त्व, जीव पदार्थ, जीवास्तिकाय आदि सभी को जानता है । जीव के सभी भेद संसारी-मुक्त, त्रस-स्थावर, गुणस्थान, मार्गणास्थान, जीवसमास सभी कुछ सीख लेता है, जीव की परिभाषा भी रट लेता है, लेकिन वह ज्ञान-दर्शन को धारण करती हुई वस्तु मैं स्वयं हूँ, जीव है सो मैं ही हूँ, ऐसी प्रतीति नहीं करता, ऐसा भाव भासन नहीं करता, इसलिये संसार में परिभ्रमण कर दुखी होता है यदि वह स्वयं को जान ले तो, परम सुखी हो जावे ।

कव्वाली- भूला है स्वयं आत्मा को, जो भुलाने के काबिल नहीं है,
आत्मन आया है अवसर सुनहरा, चूक जाने के काबिल नहीं है ॥
- मूढ़ काया को प्रतिदिन सजाता, नाना भूषण वसन नित पहनाता ।
एक दिन छूट जायेगी निश्चित्त, ममता करने के काबिल नहीं है ॥ १ ॥
- पाप को छोड़ पुण्य में आता, मानकर धर्म उसमें भ्रमाता ।
पर अरे बंध का ये भी कारण, मुक्ति मार्ग के काबिल नहीं है
- मूढ़ हो जैसा-तैसा न मानो, देव-गुरु-धर्म को अब पिछानो ।
रागी कुदेव-गुरु-धर्म भाई, तेरी श्रद्धा के काबिल नहीं है ॥
- तत्त्व निर्णय में मन को लगाओ, भेद-विज्ञान सम्यक् जगाओ ।
सर्व पर्याय गुण भेद भी तो, मैं कहने के काबिल नहीं है ॥
- ये विनाशीक खंडित दिखाते, इनके आश्रय से भव में भ्रमाते ।
ध्रुव परमभाव दृष्टि में लाओ, छोड़ देने के काबिल नहीं है ॥
- ध्रुव के आश्रय से सम्यक् उपजता, ज्ञान-चारित्र भी सच्चा प्रगटता ।
होवे शिवमार्ग अरु शिव स्वयं ही, शंका करने के काबिल नहीं है ॥
- एक ही मंगलोत्तम शरण है, ज्ञायक प्रभु निश्चय तारण-तरण है ।
होता स्वयमेव सब परिणमन है, चिन्ता करने के काबिल नहीं है ॥
- सुन, समझ, चेत, निज को समझ ले, "मात्र ज्ञायक हूँ" स्वीकार करले ।
कैसा सुन्दर समागम मिला है, ये गँवाने के काबिल नहीं है ॥